Ph.: Off.: 2633233/2955977
[illegible]

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

<table>
<tr><td>Name of the Project Undertaken</td><td colspan="2">Project on Voting Awareness</td></tr>
<tr><td>Academic Session</td><td colspan="2">2021-22</td></tr>
<tr><td>Organizing Department/ Committee</td><td colspan="2">Department of Political Science</td></tr>
<tr><td>Total Number of Students Participated in the Project</td><td colspan="2">20</td></tr>
<tr><td>Brief Report</td><td colspan="2">The Project entitled Voting Awareness was undertaken by the Department of Political Science during the session of 2021-22 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total – students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.</td></tr>
<tr><td>Criterion :1</td><td colspan="2">Metric no-1.3.3</td></tr>
<tr><td>Signature of Co-Ordinator</td><td>Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator

IQAC Coordinator
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur</td><td>Signature of & Stamp of Principal

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur</td></tr>
</table>

Ph.: Off.: 2633233/2955977

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
1	Anjail Jay Kanojiya	B.A.	II
2	Akansha Ravi Katarpawar	B.A.	II
3	Akansha Kailash Raut	B.A.	II
4	Anagha Surendra Sardare	B.A.	II
5	Anchal Ritesh Lokhande	B.A.	II
6	Anusiya Mohan Prasad Kushwaha	B.A.	II
7	Arpana Mansingh Patle	B.A.	II
8	Divya Ashok Gedam	B.A	II
9	Diksha Varman Tembhekar	B.A.	II
10	Divya Chainlal Patle	B.A.	II
11	Dropati Govind Veram	B.A.	II
12	Jaishwari Rewaram Patel	B.A.	Ii
13	Kajal Subhash Tarekar	B.A.	II
14	Kiran Kishor Nayak	B.A.	II
15	Mahima Bhagwandas Lalwani	B.A.	II
16	Mansi Monoj Barmate	B.A.	II
17	Mayavati Rekhlal Lilhare	B.A.	II
18	Sanika Mukesh Bansod	B.A.	II
19	Shraddha Netlal Hirinkhede	B.A.	II
20	Tanu Rajesh Dakha	B.A.	II

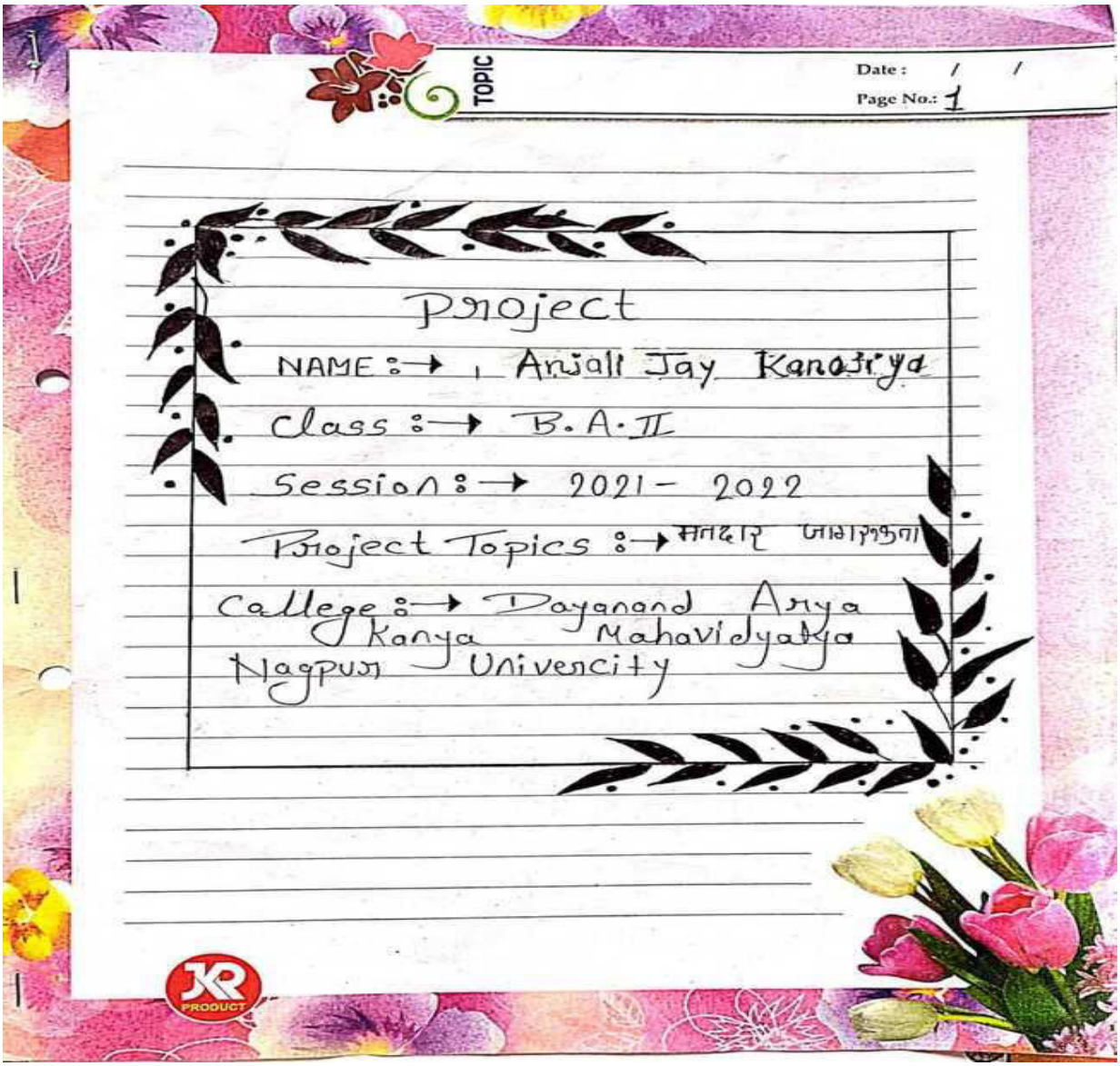

Front Page of Project

// ओ३म्

ARYA VIDYA SABHA'S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur.

'VOTING AWARENESS'

Organised By

Department of Political Science

CERTIFICATE

This is to certify that Ku. Anjali Jay Kanojiya

Student Of *B.AII* participated in "*VOTING AWARENESS*"

Project" from July 2021 to Nov 2021.

Bmthool

Co-Ordinator
Dr. BabitaThool
Dept. of Political Science

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Dr.ShraddhaAnilkumar
DAKM, Nagpur

Project Copy

Page No.
Date:

अनुक्रमणिका

अ. क्र	घटक के नाम	पृष्ठ क्र.
1	विषय का चुनाव :→	01
2	उद्देश :→	
3	प्रस्तावना :→	01
4	मतदान की आवश्यकता :→	03
5	मतदान का महत्व :→	04
6	मतदान हमारी जिम्मेदारी :→	05
7	मतदान कौन कौन कर सकता है	06
8	निष्कर्ष :→	
	अध्ययनप्रणाली :→	02
	विश्लेषण :→	05

Project Copy

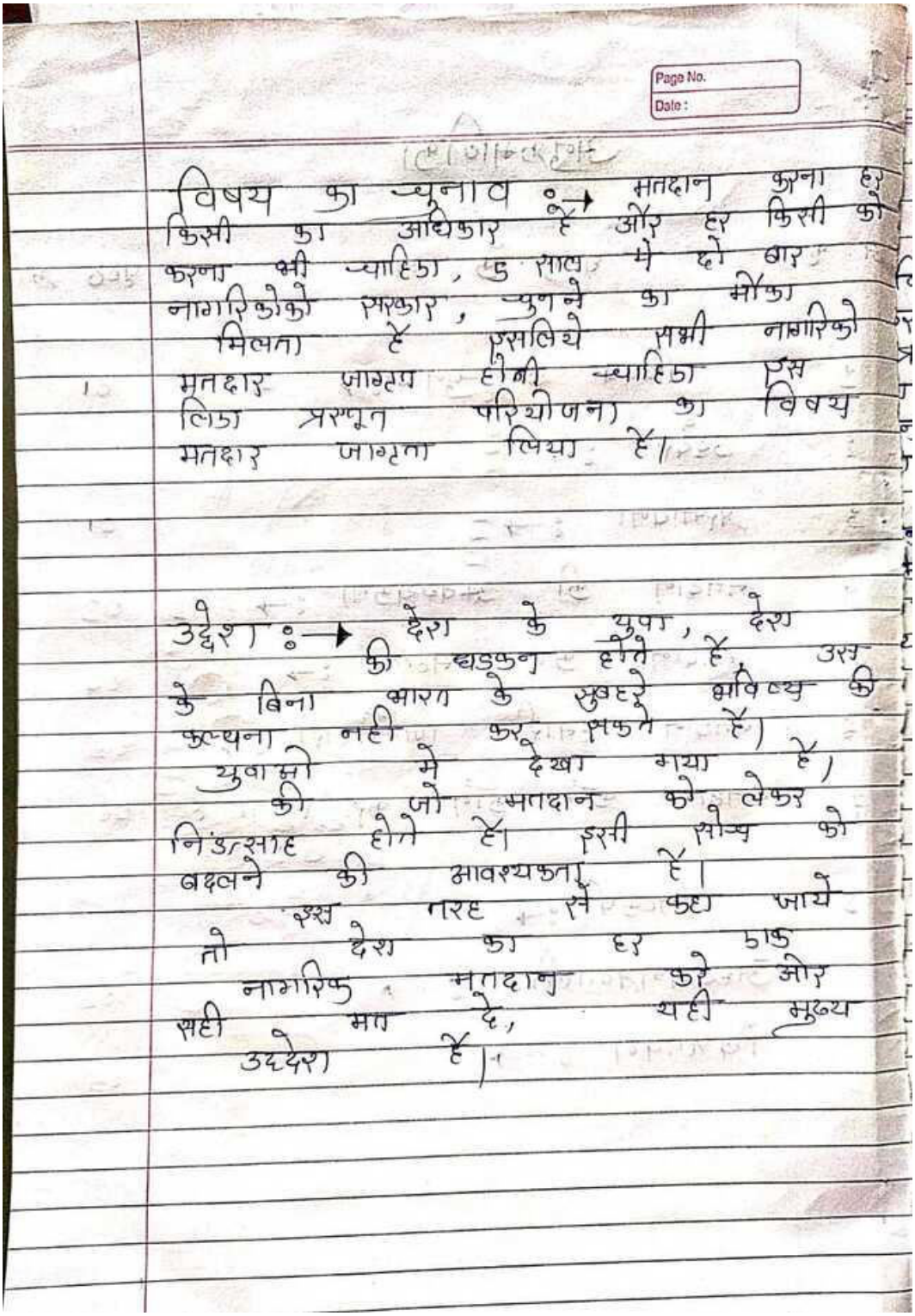

विषय का चुनाव :→ मतदान करना हर किसी का अधिकार है और हर किसी को करना भी चाहिए, 5 साल में दो बार नागरिकोंको सरकार, चुनने का मौका मिलता है इसलिये सभी नागरिको मतदार जागृत होनी चाहिए इस लिए प्रस्तुत परियोजना का विषय मतदार जागृता लिया है।

उद्देश :→ देश के युवा, देश की धड़कन होते है, उस के बिना भारत के सुनहरे भविष्य की कल्पना नही कर सकते है। युवाओ मे देखा गया है, की जो मतदान को लेकर निरुत्साह होते है। इसी सोच को बदलने की आवश्यकता है। इस तरह से कहा जाये तो देश का हर एक नागरिक मतदान करे और सही मत दे, यही मुख्य उद्देश है।

Page No.
Date :

अध्ययन प्रणाली :→ प्रस्तुत विषय का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक शोध प्रणाली का उपयोग किया जायेगा इसमे वर्तमान स्थिती का अध्ययन किया जायेगा इसमे विषय की जानकारी लेने हेतु तथ्य जुटाए जाएंगे तथ्य संकलन द्वितीय स्त्रोत का प्रयोग किया जायेगा, वृत्तपत्र, पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

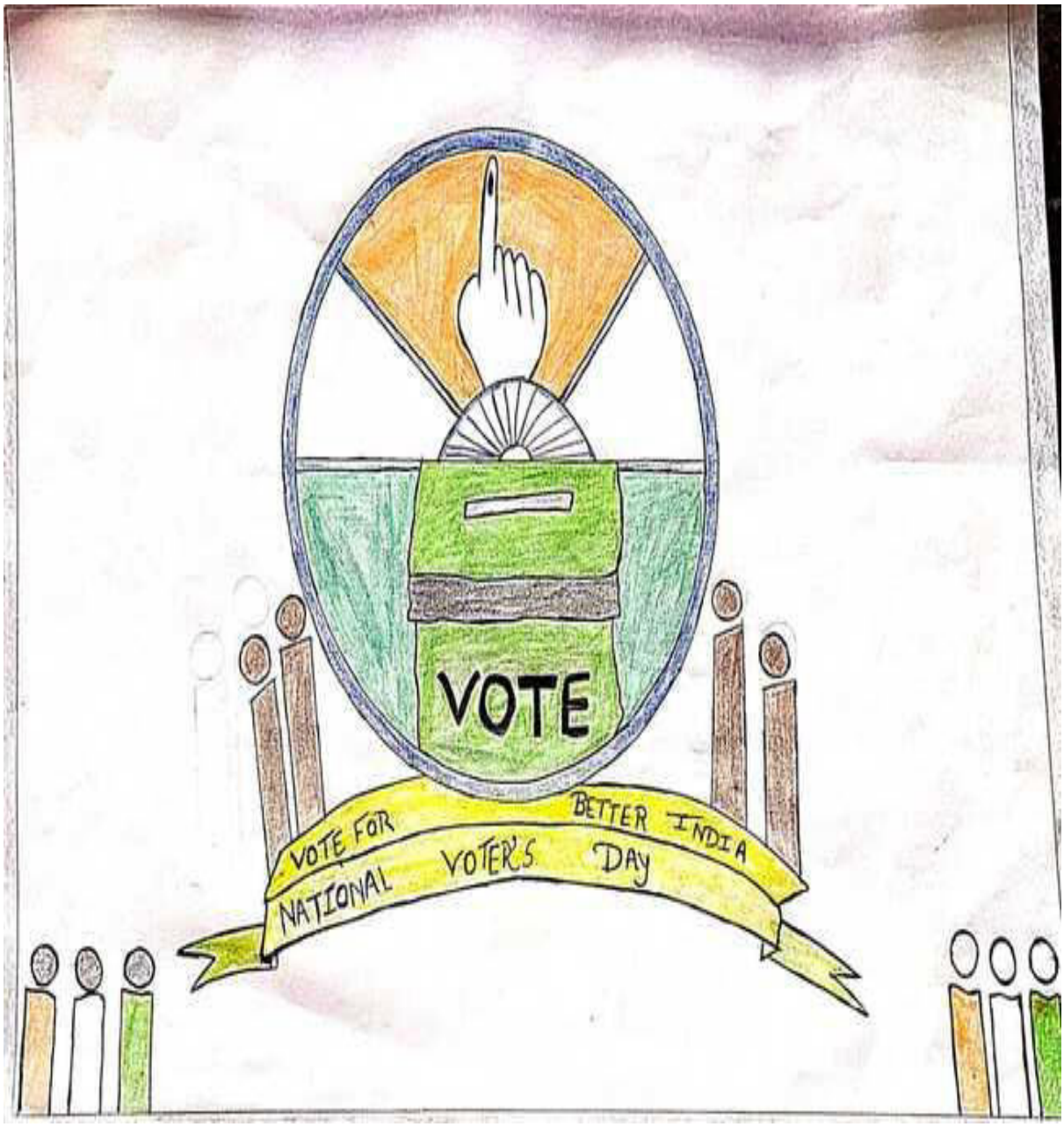
VOTE
VOTE FOR BETTER INDIA
NATIONAL VOTER'S DAY

"देश के विकास में अवश्य दें योगदान
हर हाल में करें अपना अमूल्य मतदान।"

प्रस्तावना :-

हमारा देश भारत एक लोकतांत्रिक देश है। 26 जनवरी 1950 को भारत को लोकतांत्रिक देश में सभी नागरिकों को मतदान करके प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। मतदान हमारे लिए बहुत ही जरूरी है। यह केवल सरकार की ही प्रगति नहीं करता है, बल्कि आम नागरिक की भी प्रगति का कारक होता है।

मतदान की आवश्यकता :-

लोकतंत्र को जनता का शासन कहा गया है। एक लोकतांत्रिक देश जैसे कि भारत में वही नेता सरकार बनाएगा जो जनता द्वारा चुना जाएगा। इसीलिए देश के हर एक नागरिक का मतदान करना बहुत जरूरी है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने मत का प्रयोग नहीं करता है तो हो सकता है कोई भ्रष्ट नेता सत्ता में आ जाए और देश के विकास पर यहीं रोक लग जाए। लोकतंत्र में जो ताकत जनता के पास होती है वह ताकत सरकार के पास भी नहीं होती है। इसीलिए आम नागरिक को मतदान के प्रति जागरूक होना चाहिए। अगर हम सही प्रतिनिधी नहीं चुनेंगे तो देश की सरकार किसी

गलत हाथों में चली जाएगी। इससे देश को भी नुकसान होगा और वहां रहने वाली जनता को भी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसीलिए अपने मत का प्रयोग करना बहुत आवश्यक है।

मतदान का महत्व :-

मतदान लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में ऐसी कई प्रकार की चीजें है जो मतदान से तय की जाती है। मतदान का प्रयोग कर हम अपना प्रतिनिधि चुनते हैं, जो हमारे लिए नया देश के विकास के लिए कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्य कर सके। लोकतंत्र में हर व्यक्ति का महत्व है और हर व्यक्ति को अपना कर्तव्य समझते हुए मत का प्रयोग करना चाहिए। स्वतंत्रता का सबसे बेहतरीन तोहफा हमें मताधिकार के रूप में मिला है।
हमारे दूरदर्शी संविधान निर्माताओं ने जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग के भेदभाव को खत्म कर सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार दिया। हर मतदाता चुनाव में खड़े उम्मीदवारों के गुण दोष का आंकलन करे, मतदान करे, तभी मतदाता बनने का उद्देश्य सफल होगा।

चुनाव होता है लोकतंत्र का आधार,
महत्व को इसके करो तुम स्वीकार।"

Page No.
Date :

मतदान, हमारी जिम्मेदारी :-

मतदान करना हमारी प्रथम जिम्मेदारी है। मतदान से ही हम अपने देश के भविष्य के लिए अच्छे नेता का चयन करते हैं। लेकिन कई लोग अपने इस महत्वपूर्ण अधिकार और जिम्मेदारी को नहीं निभाते, सभी इससे दूर रहना चाहते हैं। देश का नेता चुनने के लिए आम नागरिक को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इसीलिए आम नागरिक को अपने कर्तव्य को समझते हुए सही प्रतिनिधित्व को चुनना चाहिए। जिससे उनके देश को अच्छी सरकार मिल सके।

मतदान कौन कौन कर सकता है :-

भारत में हर भारतीय नागरिक जिसकी उम्र 18 साल या इससे ज्यादा है, उसे मतदान करने का अधिकार है और साथ में यह उसका मौलिक कर्तव्य भी है। देश के नागरिक को यह अधिकार भारत का संविधान देता है। प्रत्येक भारतीय नागरिक को हर पांच साल में अपने देश, प्रदेश के साथ ही नगर निकाय व पंचायत के प्रतिनिधियों को चुनने का हक है। वोट डालने के लिए अपना नाम वोटर लिस्ट में जुड़वा कर वोटर आईडी कार्ड बनवाना होता है।

विश्लेषण :→ तथ्य का संकलन विभिन्न प्रणाली द्वारा किया भाषण, पुस्तकें, पत्रपत्रों के माध्यम से तथ्यों के संकलन किया जाता। 5

Page No.
Date :

निष्कर्ष :→

एक सशक्त लोकतंत्र वही होता है, जहां हर नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करे। अगर आप बुराई और भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं तो कुछ ऐसा करें जिससे भविष्य की राजनीति का हिस्सा बन सके। ऐसा कोई दल नहीं है जिसमें भ्रष्ट नेता न हो। लेकिन आपको अपनी ताकत और सही उम्मीदवार पहचानने की जरूरत है। मतदान के लिए प्रत्येक मतदाता को जागरूक होना चाहिए ताकि वो अपने कीमती वोट सही उम्मीदवार को देकर भारत के विकास में अपना योगदान दे सके।

"करे राष्ट्र का जो उत्थान
करें उसी को हम मतदान।"

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryavani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	Project on Global Terrorism	
Academic Session	2021-22	
Organizing Department/ Committee	Department of Political Science	
Total Number of Students Participated in the Project	20	
Brief Report	The Project entitled Global Terrorism was undertaken by the Department of Political Science during the session of 2021-22 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total 20 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	Signature of & Stamp of Principal Principal Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryavani.nagp@gmail.com
|| ओ३म् ||
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

	Name of Student	Program	Class
1	Sheetal KantaramTurukmane	B.A.	3rd
2	Amisha Goutam Mesheam	B.A.	3rd
3	AnchalAhwiniIShivrajsingh Thakur	B.A.	3rd
4	Ashwin IndalMohkar	B.A.	3rd
5	Bharti Bhola Fulewar	B.A.	3rd
6	Deepali Deepak Adsude	B.A.	3rd
7	JanviAnand Katarpawar	B.A.	3rd
8	Jyotsna Ramesh Khandekar	B.A.	3rd
9	Kajal Bhaiyalal Yadav	B.A.	3rd
10	Kanchan Sonu Choudhary	B.A.	3rd
11	KomalDilipKanojiya	B.A.	3rd
12	Laxmi Avdheshpraad Shukla	B.A.	3rd
13	Madhu Dinesh Dhakad	B.A.	3rd
14	Mahima Ghanshyam Bhagwatkar	B.A.	3rd
15	Neha Santosh Gupta	B.A.	3rd
16	Prachi GyaneshwarTitre	B.A.	3rd
17	PritiKamleshgiriOnkari	B.A.	3rd
18	RameshwariBhupatiswamyPalli	B.A.	3rd
19	Shikha Shailesh Mendhe	B.A.	3rd
20	Shilpa KewalramItwale	B.A.	3rd

Front Page of Project

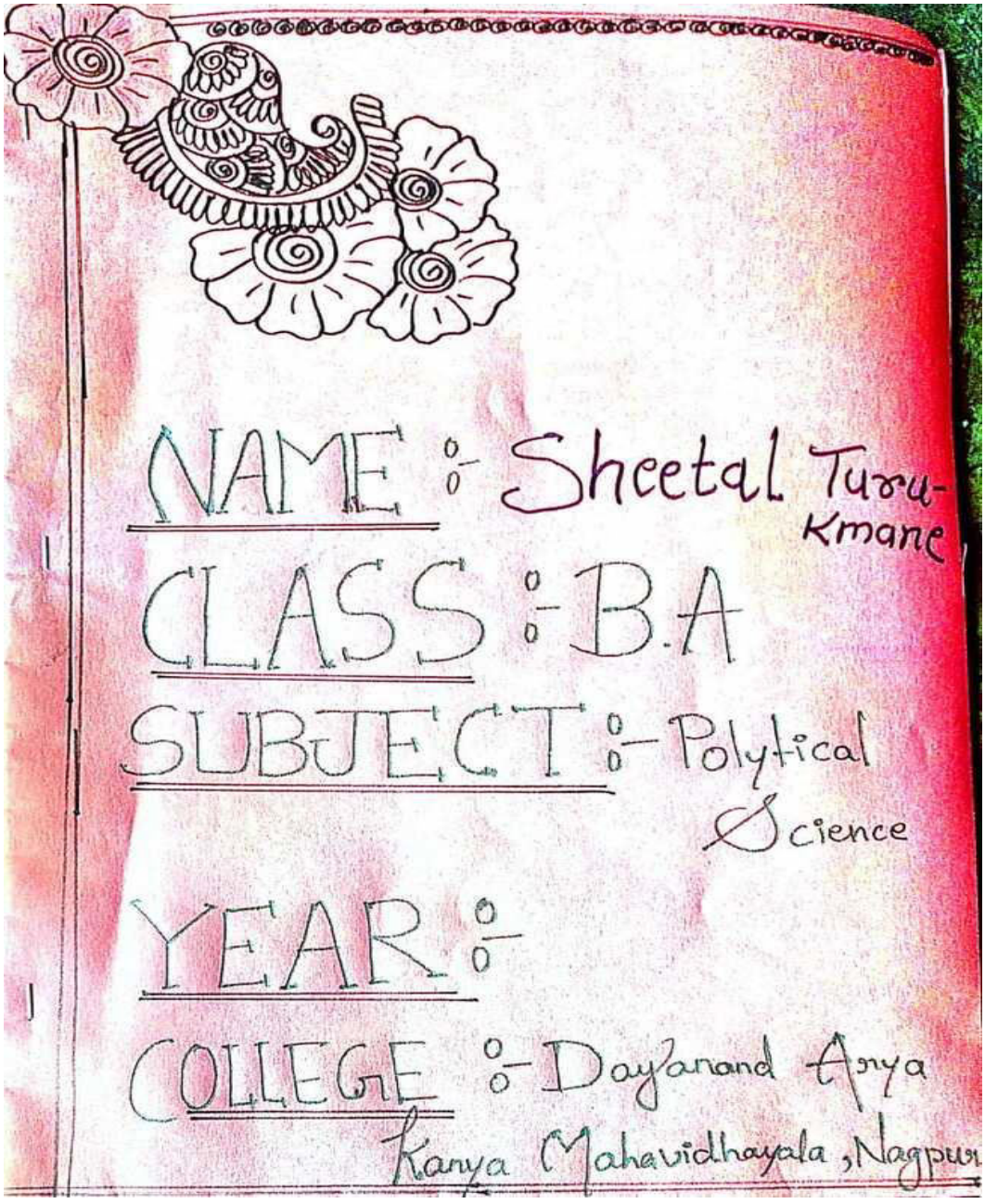

ओ३म्

ARYA VIDYA SABHA'S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur.

'Global Terrorism '

Organised By

Department of Political Science

CERTIFICATE

This is to certify that Ku. Sheetal K. Turukmane

Student Of *B.A III* participated in *"Global Terrorism "*

Project fromJuly 2021 to Nov 2021.

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Co-Ordinator
Dr.Babita Thool
Dept. of Political
DAKM, Nagpur

Principal
Dr.ShraddhaAnilkumar
DAKM, Nagpur

Project Copy

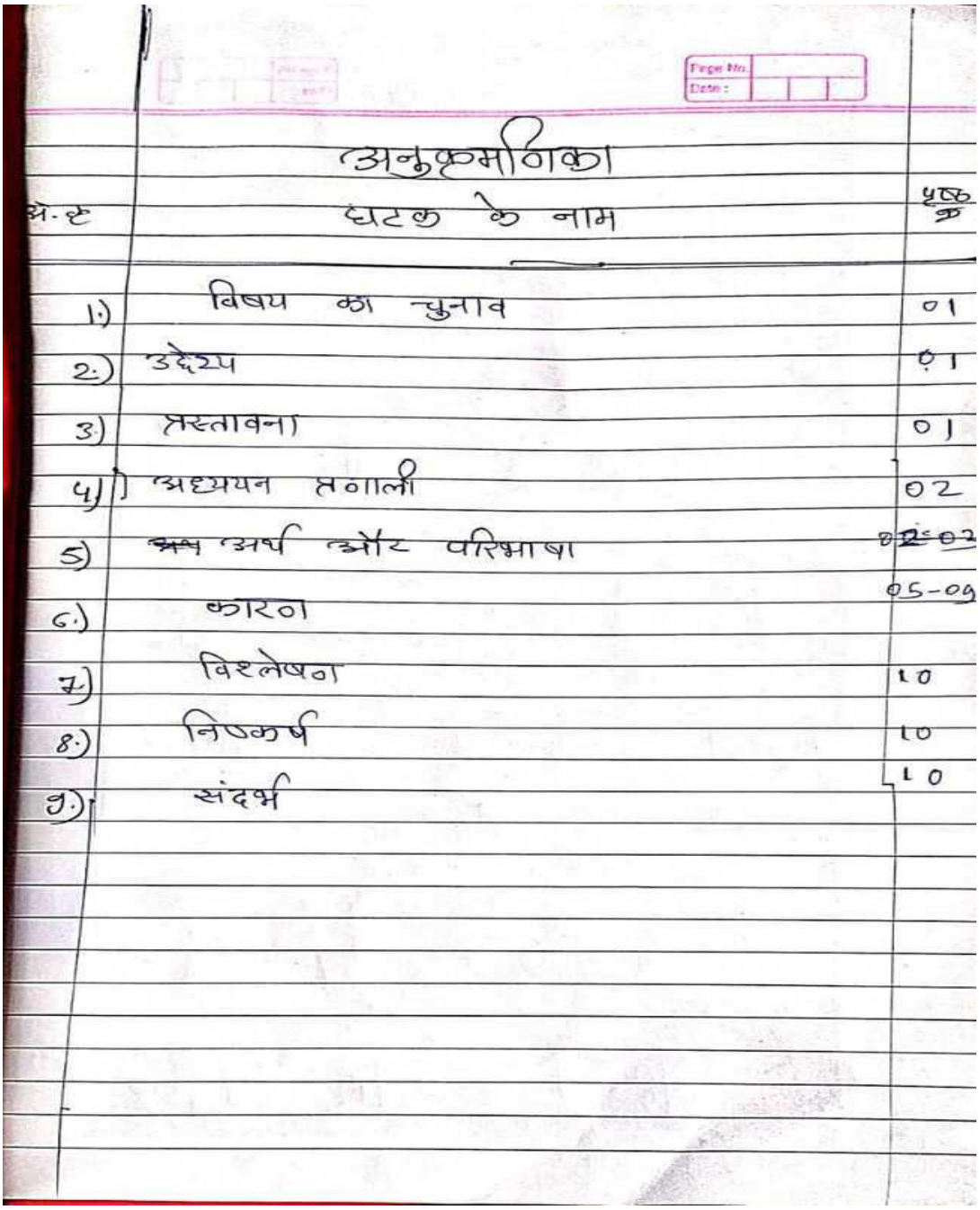

अनुक्रमणिका

अ.क्र	घटक के नाम	पृष्ठ क्र
1.)	विषय का चुनाव	01
2.)	उद्देश्य	01
3.)	प्रस्तावना	01
4.)	अध्ययन प्रणाली	02
5.)	~~अर्थ~~ अर्थ और परिभाषा	~~02-04~~ 05-09
6.)	कारण	
7.)	विश्लेषण	10
8.)	निष्कर्ष	10
9.)	संदर्भ	10

Project Copy

Project Copy

वैश्विक आतंकवाद

1) विषय का चुनाव :- आज सम्पूर्ण दुनिया आतंकवाद की समस्या से ग्रस्त है वैश्विक आतंकवाद के प्रमुख कारण क्या है, आतंकवाद के कौन - कौन से प्रकार होते है, किस तरह से आतंकवाद के दुष्परिणाम क्या होते है आतंकवाद पर नियंत्रण रखने हेतु अंतराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने किस प्रकार प्रयास किया है इस सब की जानकारी अध्ययन करने हेतु इस विषय का चुनाव किया गया है।

2. उद्देश्य :- आतंकवाद के कारण क्या है और आतंकवाद के तंत्र व साधन कौन - कौन से होते है और आतंकवाद पर नियंत्रण करने हेतु क्या - क्या प्रयास किये गये इन सभी का अध्ययन करना।

3. प्रस्तावना :- आतंकवाद की समस्या का गंभीर स्वरूप सम्पूर्ण दुनिया को नजर आया। तथापि इस समस्या का स्वरूप ही अंतरराष्ट्रीय समस्या में परिवर्तित हुआ। तांत्रिक तथा वैज्ञानिक प्रगती, व यातायात के साधनों का विकास का उपयोग आतंकवादियों ने अपने विकास हेतू करवाया। परिणामस्वरूप आतंकवाद की समस्या का सामना अमेरिका से लेकर चीन, जापान, स्पेन, फ्रांस, इंग्लैंड आदि सभी

Project Copy

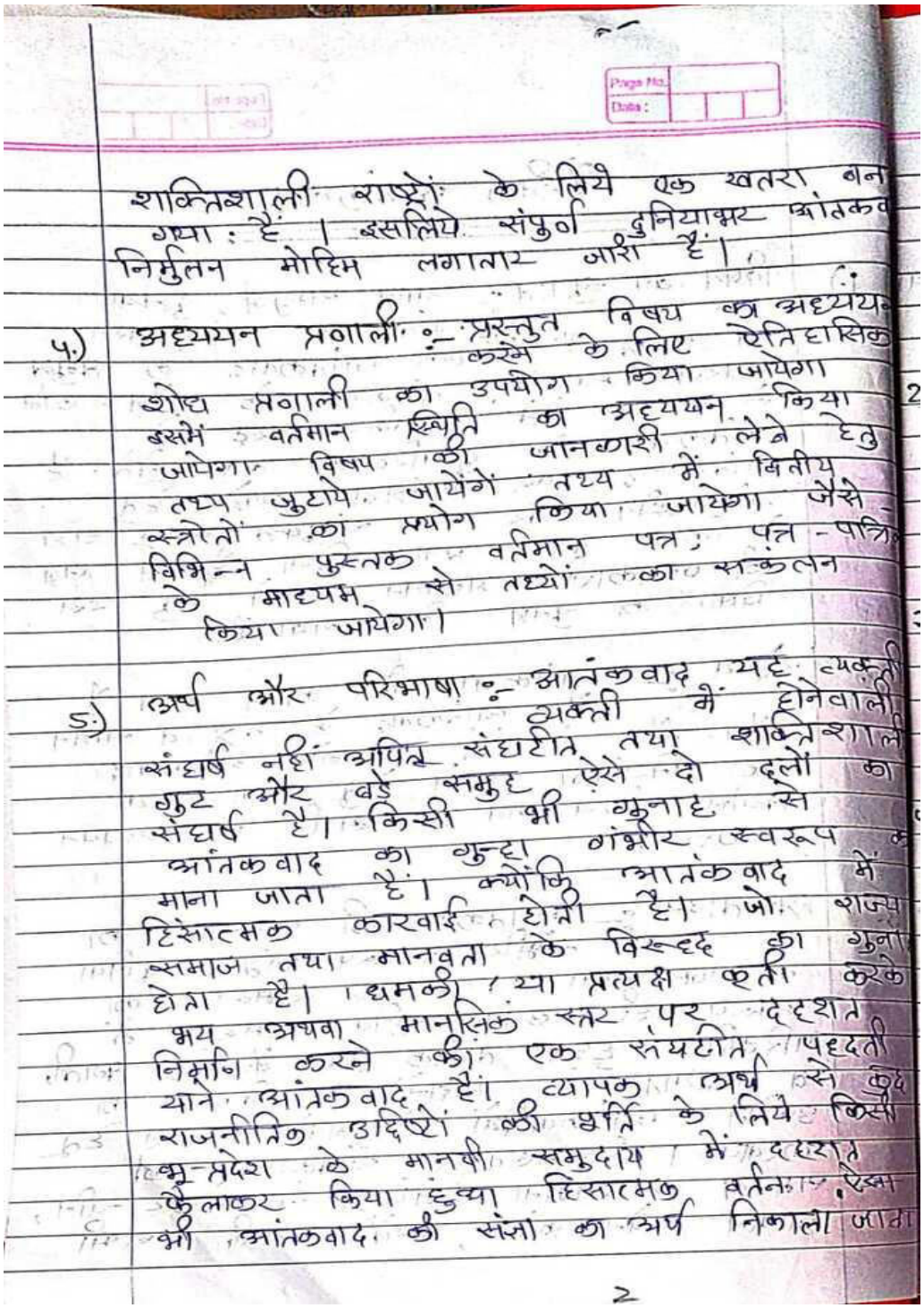

शक्तिशाली राष्ट्रों के लिये एक खतरा बन गया है। इसलिये संपुर्ण दुनियाभर आंतकवाद निर्मुलन मोहिम लगातार जारी है।

4.) अध्ययन प्रणाली :- प्रस्तुत विषय का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक शोध प्रणाली का उपयोग किया जायेगा। इसमें वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया जायेगा। विषय की जानकारी लेने हेतु तथ्य जुटाये जायेंगे। तथ्य में वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। जैसे विभिन्न पुस्तक वर्तमान पत्र; पत्र-पत्रिका के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

5.) अर्थ और परिभाषा :- आतंकवाद यह व्यक्ती संघर्ष नहीं अपितु संघटीत तथा शक्तिशाली व्यक्ती में होनेवाली गुट और बड़े समुह ऐसे दो दलों का संघर्ष है। किसी भी गुनाह से आंतकवाद का गुन्हा गंभीर स्वरूप का माना जाता है। क्योंकि आतंकवाद में हिंसात्मक कारवाई होती है। जो राज्य समाज तथा मानवता के विरूद्ध का गुना होता है। धमकी या प्रत्यक्ष कृती करके भय अथवा मानसिक स्तर पर दहशत निर्माण करने की एक संघटीत पद्धती याने आंतकवाद है। व्यापक अर्थ से कुछ राजनीतिक उद्दिष्टों की पुर्ति के लिये किसी भू-प्रदेश के मानवी समुदाय में दहशत फैलाकर किया हुवा हिंसात्मक वर्तन ऐसा भी आंतकवाद की संज्ञा का अर्थ निकाला जाता

आतंकवाद के कारण :-

आधुनिक युग में आतंकवाद की समस्या अधिक महत्वपूर्ण बन गयी है। भारत इस समस्या का सामना लंबे समय से कर रहा है। तथापि आतंकवाद की समस्या अंतरराष्ट्रीय बन गयी है। इसका अर्थ आतंकवाद की समस्या अधिक मात्रा में बढ़ गयी है इसके कारण क्या है? यह भी हमें जानना होगा।

1) आर्थिक कारण :- दुनिया में बढ़ते आतंकवाद की समस्या में ऐसे लोग समाहित है जो आर्थिक रूप से अभावग्रस्त है। और ऐसे लोग भुख अभाव शोषण और उपेक्षा आदी कारण से त्रस्त है। विश्व में 150 करोड़ से अधिक व्यक्ति दरिद्रता का जीवन जी रहे है। विकासशील देश में इन दरिद्र व्यक्तियों का निवास है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व बैंक की स्थापना पर यह आशा थी कि वह उनकी आर्थिक मदत कर सके तथा उन्हे उन्नत बनाने में सहायक होंगे परंतु ऐसा न हो सका और उसकी नितिया विकासित राष्ट्रो के ही आर्थिक हितों का संरक्षण करती है। सुडान, लिबिया, सिरीया, श्रीलंका, अफगानिस्थान, नायजेरिया आदी राष्ट्रो में आतंकवाद के फैलाव के कारण केवल गरीबी है।

2\. राजनैतिक कारण :- किसी राष्ट्र के विशिष्ट गुट या समुदाय को अपना राजनैतिक उद्देश्य साध्य करने के मार्ग में प्रचलित व्यवस्था अगर बाधककारी लगती है तो वह समुदाय सनदशीर मार्ग के अलावा आतंकवादी मार्ग को अपनाता है। सिर्फ एक ही शासन व्यवस्था उपयुक्त है और अन्य सब अनुपयुक्त है। यह सही है की लोकतंत्र शासन की सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं है की लोकतंत्र की इस व्यवस्था को बाध्यकारी तरीको से स्वीकार कराना लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता, और न ही इसके लिये हिंसक साधन अपनाना उपयुक्त है। इराक के तत्कालीन राष्ट्रपति सद्दाम हुसेन, क्यूबा के राष्ट्रपति फिडल कॅस्ट्रो, आयर्लैंड की आयरीश आर्मी, श्रीलंका के लिबरेशन टायगर ऑफ तमील इलम, पॅलेस्टाईन लिबरेशन आर्गनायझेशन यह इनके उदा. है, भारत में गोरखालैंड, खलिस्थान आदि राजनैतिक उद्दिष्ट प्राप्ती हेतु हि किये है। आतंकवाद आंतरराष्ट्रीय जगत मे भी आतंकी घटनाए राजनीतिक उद्दिष्ट से ही दिखाए देते है। काश्मीर के लिये जे.के. एल एक यह आतंकवादी संघटना ने भारत, पाकिस्तान के बीच आतंकी कारवाई कि गयी है।

3.) धार्मिक कट्टरता :- आतंकवाद का एक रूप धार्मिक भी दिखाई देता है। इस्लामिक आतंकवाद यह दुनिया पर भारी होता दिखाई देता है जिहाद के नाम पर आतंकी घटना में अनेक युवा शामिल होते है। 11 सप्टेंबर 2001 में अलकायदा इस आतंकवादी संघटनाने न्यूयार्क में वैश्विक व्यापार केंद्र पर हमला किया था। धार्मिक आतंकवाद की शुरूवात सर्वप्रथम इस्रायल तथा पॅलेस्टाइन से हुयी, तत्पश्चात धार्मिक कट्टर पंथियोंने दुनियाभर मे धार्मिक आतंकवाद फैलाने का काम किया है धर्म के आधार पर जमातवाद या सांस्कृतिक मुल्यों को जोड दिया जाता है। आतंकवाद की समस्या में धार्मिक आतंकवाद यह शिखर स्थान पर है।

4.) असंतुष्ट युवावर्ग :- गरिबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, भेदभाव के कारण युवा वर्ग निराशा की छाया में है। आज का युवा अधिक मात्रा में महत्वकांक्षी है परंतु महत्वाकांक्षा पूर्ण करने के साधन पर्याप्त नहीं है। और संघटना इसी का फायदा उठाके युवाओं को आकार्षित करके छोटे - छोटे काम के अधिक पैसे देकर अपनी संघटना में शामिल करते है और इन युवाओं को तस्करी, मादक पदार्थो का उपयोग, अवैध व्यवसाय कि ओर आकार्षित किया जाता है। दुनिया भर की अनेक आतंकवादी संघटना बेरोजगार तथा असंतुष्ट युवाओं के बलपर कार्यरत हैं। और यही युवावर्ग आतंकी हमले, बॉम्बस्फोट, गोला बारी जैसे घटना में आघाडीपर है।

आंतकवाद को प्रशिक्षण देना, शस्त्रास्त्र आर्थिक तथा तांत्रिक सहायता करना, तथा आंतकवादी कृत्य करने हेतु प्रेरित करना इत्यादि मार्ग से आतंकवाद को बढ़ावा देने का कार्य राष्ट्र करते है। आंतरराष्ट्रीय आतंकवाद तथा सीमा पार का आतंकवाद इसी प्रकार में आता है। उदा. पाकिस्तान द्वारा पुरस्कृत भारत में का आंतकवाद, पंजाब में खलिस्तानियों का आंतक वाद इत्यादि

8.) नियंत्रक सत्ता संबंधी आशंका :- समाज में शांतता तथा सुव्यवस्था कायम रखने हेतु अवैध व अनैतिक कार्यों पर नियंत्रण रखने की जिम्मेदारी पुलिस सुरक्षा दल तथा शासन कर्ताओं की होती है परंतु सुरक्षा दलों की गतिविधियां तथा शासन कर्ताओं के नीति निर्धारक धोरण में पक्षपात होते हुये भी तथापि सुरक्षा दल के अप्रमाणिक कार्यों को शासन वर्ग का अगर प्रोत्साहन मिलता है तो विद्रोह समूह आंतकवादीयों का सहारा लेते है दुनिया में अनेक राष्ट्रों में शासन कर्ताओं के पक्षपाती नीती से आतंकवादी संकट निर्माण होने के अनेक उदा. दिखाई देते

9.) मादक पदार्थों की तस्करी :- विभिन्न राष्ट्र के सीमा वर्ती भागों में छुपा व्यापार तथा प्रतिबंधित मादक पदार्थों की तस्करी बड़े पैमाने पर चलती है। अमेरिका तथा मेक्सिको के सीमा पर चलने वाले मादक पदार्थों की तस्करी तथा भारत के पूर्व पश्चिम सीमापर पड़ोसी राष्ट्र

से होने वाली मादक पदार्थो का छुपा व्यापार बड़े पैमाने पर चलता है। जिससे करोड़ो का व्यवहार (Transaction) होता है। इस अवैध तथा घातक व्यवसाय को किसी के द्वारा विरोध ना हो, तथापि इसकी जानकारी कोई पुलीस एजेंसियों को न दे इसलिए भी आंतकवादी कृत्यों का सहारा लिया जाता है। तथापि पकड़ा हुआ गुप्तमाल तथा अपने साथीदारों के छुड़ाने हेतु भी हिंसक आंदोलन का सहारा लिया जाता है। अमेरिका तथा युरोप के अनेक विकसित राष्ट्र मादक पदार्थो का छुपा व्यापार तथा आंतकी कारवाई का सामना कर रहा है।

② भ्रष्टाचार, दलीय राजनीति व न्यायनिर्णय को विलंब :- दुनिया के अनेक राष्ट्रों मे भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर दिखाई देता है। भ्रष्टाचार के कारण अनेक अवैध तथा अनैतिक कार्योपर प्रतिबंध लगाने में बाधाये आती है। परिणाम स्वरूप लोगों में, विशेष रूप से युवाओं में असंतोष निर्माण होता है। यही असंतोष से भी आंतकवाद को बढ़ावा मिलता है। भ्रष्टाचार जैसे तथा आंतकी कारवाई को न्यायालय में जल्दी निर्णय नहीं लगते है। न्याय प्रकिया में होने वाली विलंब से कुछ गुट सनदशीर मार्ग का अवलंबन करते है अपने ही हाथो में कानून लेते है। अर्थात हिंसक मार्ग को अपनाते है।

विश्लेषण :- तथ्य का संकलन करके इसका विश्लेषण किया गया और एक निष्कर्ष निकाला गया।

निष्कर्ष :- ~~आतंकवाद~~ आतंकवाद पर नियंत्रण रखने हेतु प्रत्येक राष्ट्र के द्वारा अपने स्तर पर प्रयत्न किये जाते है। इस प्रयास में दुनिया में का अन्य राष्ट्रो ने भी एक दुसरे को मदत करने हेतु सम्मेलन, शिखर सम्मेलन, परिषदों का आयोजन करके कई करार किये है। परंतु इसमें जो प्रस्ताव पारित हुये या करार किये गये उसे आतंकवाद का सफाया करने मे ये राष्ट्र सफल नहीं रहे। कारण इसमें राष्ट्रो के हित संबंध तथा राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव जैसी बाधाये आयी। आतंकवाद का निर्मुलन करने हेतु इमानदारी से निष्पक्ष रूप से, निरंतर रूप से, निरंतर रूप से प्रयास करना आवश्यक होगा। तथापि वैश्विक इच्छा शक्ति तथा वैश्विक जनमत की भी आवश्यकता होगी।

संदर्भ :- तुलनात्मक शासन तथा राजनीति और आंतरराष्ट्रीय संबंध

लेखक :- डॉ. शीला संजय खेडीकर

Ph.: Off.: 2633233/2953977
aryavani.ngp@gmail.com
|| ओ३म् ||
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	Music Project on Remix & Fusion	
Academic Session	2021-22	
Organizing Department/ Committee	Music	
Total Number of Students Participated in the Project	10	
Brief Report	The Project entitled Remix & Fusion was undertaken by the Department of Music during the session of 2021-22 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total 10 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	Signature of & Stamp of Principal Principal Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur

Ph.: Off.: 2633233/2955977

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
1	Komal Ingole	B.A.	B.A ll
2	Vaisali koche	B.A	B.A ll
3	Dipika Prasad	B.A	B.A ll
4	Prschi Meshram	B.A	B.A.ll
5	Simran Basaha	B.A	B.A ll
6	Kajal Lilhare	B.A	B.A ll
7	Priyanka Prajapati	B.A	B.A ll
8	Deepa Meshram	B.A	B.A ll
9	Tikeshwari Sahu	B.A	B.A ll
10	Anjali Sahu	B.A	B.A ll

I

Front Page of Project

Dayanand Area Kanya mahavidyalaya

Jaripatka Nagpur

Music Project

Project on Remix & Fusion

Class: - BA II Year

Session:- 2021-2022

Project. Submitted by

Ku. Komal Ingole

|| ARYA VIDYA SABHA'S ||

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur

MUSIC PROJECT

Organised By

Department of MUSIC

CERTIFICATE

This is certify that project wark in the Music entitled Remix & Fusion has been successfully completed by ku komal Ingole of B.A ll Year during the Academic session 2021-22 Hence the certificate is awarded to her.

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Co-Ordinator
Mrs Anita Sharma
Dept. of Music
DAKM, Nagpur

Principal
Dr. ShraddhaAnilkumar
DAKM, Nagpur

विषय का चुनाव

हमने इस विषय का चुनाव इसलिये किया है कि आज की जो युवा पीढ़ि है। भारतीय संगीत में Remix और fusion को अपनाया गया है। संगीत जगत और पाश्चात संगीत Remix और fusion को अपनाया है। उसकी प्रस्तुती दिखाई देती है। पुरानी धुनों, पुराने गीतों को नवीन बनाना और उसे मनोरंजन का कारण बनता है। आज की भाग दौड़ की जिंदगी में लोग गानों को रुक-रुक करके सुन नही पाते है इसलिए Remix और fusion की व मदद लोग पुनः यह आनंद प्राप्त कर सकते है। इसलिए हमने इस विषय का चुनाव किया है।

उद्देश्य

1) पुराने गीतों को नये तरीके से बनाने में Remix और fusion मदद करते हैं।

2) जो हमारा भारतीय संगीत है उसको बनाए रखना और उसमें ही मौलिक बनाकर रखने पुराने गानों को नवीन करके इसकी प्रस्तुती करनी चाहिए।

Project copy

Project copy

REMIX & FUSION

FUSION or REMIX New संगीत प्रकार है

भारतीय संगीत मे लगभग दो दशकों से रिमिक्स और फ्यूजन दो शब्दों की बड़ी तेजी से लोकप्रिय हुए है। इस दौर की युवा पीढी भी इसको लेकर खासी भ्रान्ती मे है। आमतौर पर फिल्मों से आनेवाला संगीत भी इस पीढी की दिवानगी है। और वह उसे ही भारतीय संगीत मानते हैं।

Fusion और Remix भले ही अत्याधुनिक और Latest है तथा वे ऐसे कथित नव्य प्रयोगों के मूल में निहित है कल्पना, भावना, विचार का अस्तित्व बड़ा पहले से, बल्कि संगीत में तो वैदिक काल से ही देखा जा सकता है। आज fusion मे पाश्चात्य और लोक संगीतों फोक और fusion मैसाले मिलाकर भारतीय शैली की भाषाओं के गानों को परोसा जा सकता है। Remix में पुराने गानों को नए Music नये Background नए Rhythem Patterns नई प्रयोगशीलता आवाजों के साथ पेश किया जा रहा है।

भारतीय संगीत इस संज्ञा के अंतर्गत परंपरागत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत आनेवाली ख्याल, ध्रुपद, टप्पा आदि विधाएं समाविष्ट है तथा fusion यह शब्द नवीन दृष्टिकोण को समझाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। fusion

यह शब्द नवीन दृष्टिकोण को समझाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। fusion से भारतीय व विदेशी वाद्यसंगीत व भारतीय कण्ठसंगीत आदि मिलापों का अर्थबोध होता है उसी प्रकार Remix इस संज्ञा के अंतर्गत पुराने फिल्मी गीतों का आधुनिक वाद्यों के साथ तथा लय परिवर्तन के साथ किया गया नव संस्करण आएगा। 'ख्याल गायन' यदि आधुनिक काल में उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्रचलित विद्या है। ख्याल गायन के विशाल क्षेत्र मे फ्यूजन का प्रवेश न के बराबर है। ऐसा कहने पर भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पंडित अजय पोहनकर जी के फ्यूजन के प्रयोग पंडित विजय राघव राव के वाद्य संगीत में fusion के प्रयोग आदि गिने चुने प्रयोग अपवाद के रूप से क्षेत्र मे सुनने मिलते है। Remix आज एक अत्यंत उसका विकास तथा उसका लोकप्रिय विज्ञान द्वारा प्राप्त संगीत के इलेक्ट्रानिक उपकरणों तथा रिकार्डिंग के माध्यमों के अविष्कार के कारण बड़ी तेज गति के साथ हुआ है।

ख्याल गायन में जहाँ fusion के प्रयोग अतिनगण्य है। वहाँ रिमिक्स संगीत का प्रवेश अभी शून्य है। Remix संगीत का कार्यक्षेत्र वस्तुतः 1950 के बाद के फिल्मी एवं गैर फिल्मी संगीत को अपग्रेड करने तक ही सीमित है। गीत को रिमिक्स करते वक्त संभवतः यह ध्यान

रखा जाता है कि वह संगीत या तो श्रोताओं के मनपटल पर तरोताजा हो या फिर किसी विशिष्ट कालखंड में उस संगीत ने श्रोताओं के हृदय पर विशेष प्रभाव छोड़ा हो। उदः लगा चुनरी में दाग।

Remix संगीत का कार्यक्षेत्र मनुष्य से लोकप्रिय फिल्मी संगीत एक ही सीमित होने के कारण भले ही उसकी चपेट में शास्त्रीय आधारित फिल्मी गीत भी आ गए हो ख्याली संगीत में उसका प्रवेश हुआ ही नहीं है, तथा भविष्य में होने की संभावना भी दिखाई नहीं देती।

वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप एवं विश्वीकरण के कारण अलग अलग देशों की संस्कृतियों में आदान-प्रदान की प्रक्रिया होने लगी। भारतीय संगीत की भी संपूर्ण विश्व में लोकप्रियता मिली। भारत के बाहर स्थित भारतीय संगीतकारों ने अन्य देशों के संगीत के साथ भारतीय संगीत का मिश्रण कर उसे एक अलग पहचान देने का प्रयत्न किया। जो fusion music के नाम से लोकप्रिय हुआ। आज के इस जागतीकीकरण के दौर में संगीत क्षेत्र में कई अविष्कार तथा नये प्रयोग हो रहे हैं। fusion के माध्यम से पाश्चात्य संगीत एवं भारतीय संगीत का सुयोग्य मेल यह वर्तमान संगीत में एक नया अविष्कार है जैसे कि जब विख्यात 'फिलहार्मनिक' नामक वाद्यवृंद के दिग्दर्शक जुबीन मेहता इनके पाश्चात्य वृंदवान पर आधारित

सितार वादन या फिर जाकिर हुसैन, शिवमणी तौफिक कुरेशी, शंकर महादेव, स्नेहवा गणेशन उनकी भारतीय तथा पाश्चात्य वाद्यों के साथ क्लासिकल संगीत की जुगलबंदी तथा हाल ही में लंदन में हुए सोनु निगम का वहाँ के सुप्रसिद्ध (Symphony) साथ पुराने गीतों का प्रस्तुतिकरण यह सभी fusion के उत्तम उदाहरण है। पं० विश्व मोहन भट्ट इन्होंने पाश्चात्य हवाइन गिटार पर शास्त्रीय संगीत का प्रस्तुतीकरण करके नया इतिहास कायम किया।

Fusion तथा Remix के कारण ख्यालगायन की लोकप्रियता में कुछ कमी आ गई है। वस्तुतः यह दो पूर्णरूपेण भिन्न संगीत प्रकार है जो अपना खास स्रोत रखते है। फ्यूजन तथा Remix उस संगीत के अंतर्गत आयेंगे जिसे Massical music कहा जाता है। जबकि ख्याल गायन Classical Music में फिल्मी संगीत पर उसके बाद भारत मे अवरित पाश्चात्य संगीत के P.P तथा Rock अवतारों की ख्याली संगीत पर आक्रमण होने का आरोप हमेशा से ही लगता आया। और अब fusion तथा Remix संगीत पर यह आरोप लगा है।

अंत में इतना ही स्पष्ट करना चाहेंगे की किसी भी प्रकार के संगीत का मूल्यांकन करना या उसका स्तर निश्चित करना अयोग्य है। फिर वह पाश्चात्य संगीत हो या भारतीय संगीत हमें अपनी सीमाएं खुद तय करनी है।

Pioneer

Page No.
Date

॥ निष्कर्ष ॥

आज Remix और fusion लोकप्रीय मान्यता प्राप्त है। संगीत में जो ये बदलाव हुआ है। ये बहुत ही अच्छा बदलाव हुआ है और इस लिये ही टीवी को अच्छे कामों के लिये हमने अपनाना चाहिये।

Ph.: Off.: 2633233/2935977
aryavani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	Paper bag	
Academic Session	2021-22	
Organizing Department/ Committee	E.V.S	
Total Number of Students Participated in the Project	10	
Brief Report	The Project entitled **Paper Bag** was undertaken by the Department of **E.V.S** during the session of 2021-22 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total **10** students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	Signature of & Stamp of Principal Principal Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
01	Srushti Dhawale	B.A.	II Year
02	Nikita Patva	B.A.	II Year
03	Nikita Lanjewar	B.A.	II Year
04	Amisha Fulzele	B.A.	II Year
05	Varsha Patel	B.A.	II Year
06	Simran Gindron	B.A.	II Year
07	Pooja Bagde	B.A.	II Year
n08	Shraddha Yadav	B.A.	II Year
09	Suhani Devagadkar	B.A.	II Year
10	Sakshi Mandape	B.A.	II Year

Front Page of Project

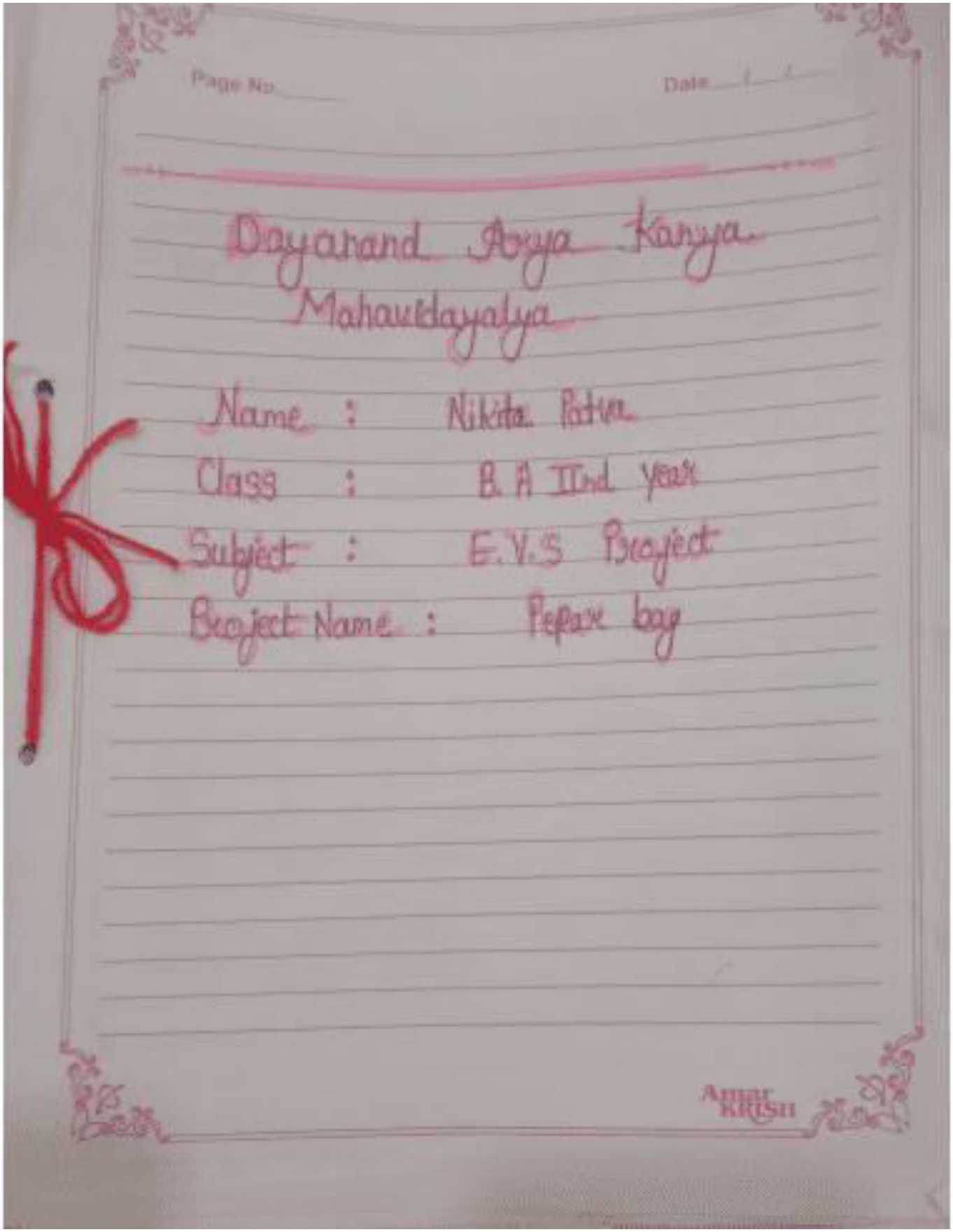

ओ३म्

ARYA VIDYA SABHA'S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur.

Organised By

Department of E.V.S.

CERTIFICATE

This is to certify that Ku. Nikita Patva Student Of *B.A II* participated in "Project on Paper Bag." during the Academic session 2021-22 Hence the certificate is awarded to her.

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Co-Ordinator	**Principal**
Dr. Chetna Pathak	**Dr. Shraddha Anilkumar**
Dept. of E.V.S	**DAKM, Nagpur**
DAKM, Nagpur	

Project Copy

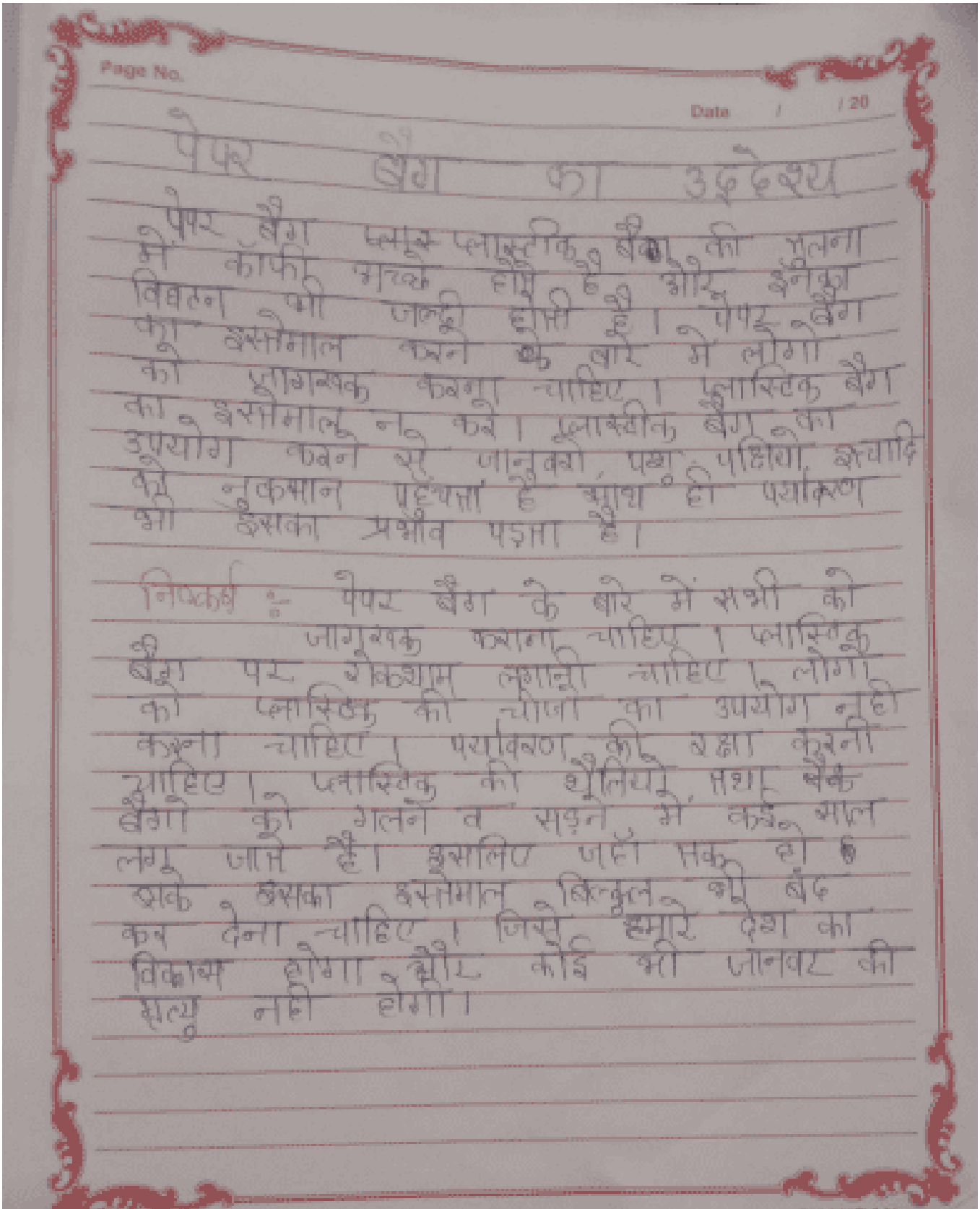

Page No.

Date / /20

पेपर बैग का उद्देश्य

पेपर बैग प्लास्टिक बैग की तुलना में काफी अच्छे होते हैं और इनका विघटन भी जल्दी होता है। पेपर बैग का इस्तेमाल करने के बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए। प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल न करें। प्लास्टिक बैग का उपयोग करने से जानवरों, पशु, पक्षियों, इत्यादि को नुकसान पहुँचता है साथ ही पर्यावरण भी इसका प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :- पेपर बैग के बारे में सभी को जागरूक कराना चाहिए। प्लास्टिक बैग पर रोकथाम लगानी चाहिए। लोगों को प्लास्टिक की चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। प्लास्टिक की थैलियाँ, तथा बैग बैगों को गलने व सड़ने में कई साल लग जाते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके इसका इस्तेमाल बिल्कुल ही बंद कर देना चाहिए। जिससे हमारे देश का विकास होगा और कोई भी जानवर की मृत्यु नहीं होगी।

Project Copy

Page No. Date / /20

पेपर बैग (पॉलिथीन)

एक पेपर बैग कागज से बना एक बैग होता है। आमतौर पर क्राफ्ट पेपर। ग्राहको की मांगो को पूरा करने के लिए पेपर बैग या तो कुंवारी या पुनर्नवीनीकरण फाइबर के साथ बनाया जा सकता है। पेपर बैग आमतौर पर शॉपिंग कैरियर बैग के रूप मे और कुछ उपभोक्ता वस्तुओ की पैकेजिंग के लिए उपयोग किए जाते है। वे किराने का सामान, कांच की बोतले कपड़े, किताबे, प्रसाधन, सामग्री इलेक्ट्रॉनिक्स और कई अन्य सामान से उत्पादो की एक विस्तृत श्रृंखला है। और दिन - प्रतिदिन की गतिविधियो मे परिवहन के साधन के रूप में भी काम कर सकते है।

पेपर बैग के फायदे

① पेपर बैग को न केवल रिसाइकल किया जा सकता है बल्कि यह मात्र 1 महीने में ही विघटित हो सकते है।

② पेपर बैग जानवरो के लिए भी प्लास्टिक बैग के मुकाबले नुकसानदायक नही है।

③ खाद्य बनाने के लिए भी पेपर बैग का इस्तेमाल किया जा सकता है।

Project Copy

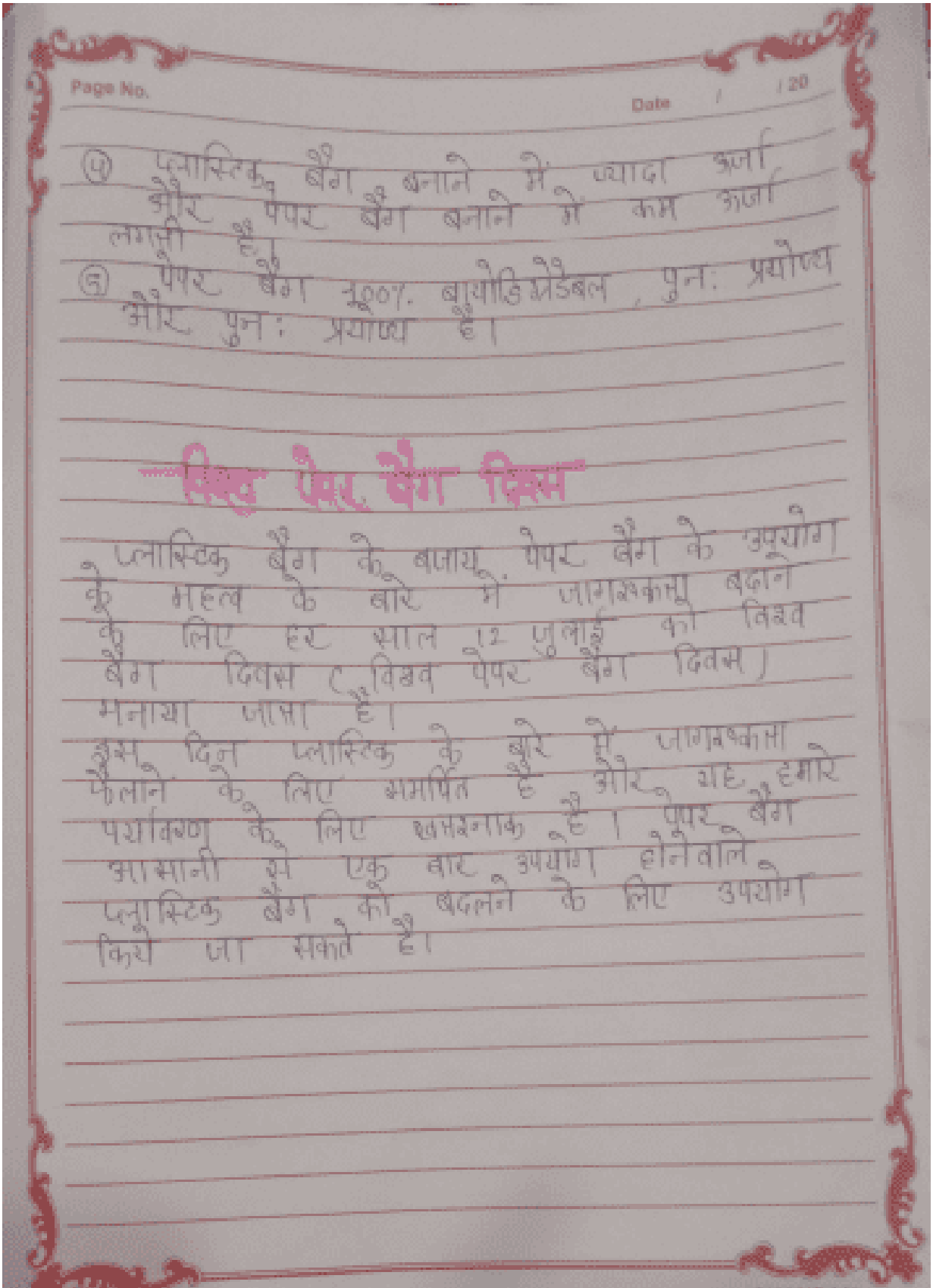

Page No. Date / /20

(4) प्लास्टिक बैग बनाने में ज्यादा ऊर्जा और पेपर बैग बनाने में कम ऊर्जा लगती है।

(5) पेपर बैग 100% बायोडिग्रेडेबल, पुनः प्रयोज्य और पुनः प्रयोज्य है।

विश्व पेपर बैग दिवस

प्लास्टिक बैग के बजाय पेपर बैग के उपयोग के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 12 जुलाई को विश्व बैग दिवस (विश्व पेपर बैग दिवस) मनाया जाता है।

इस दिन प्लास्टिक के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है और यह हमारे पर्यावरण के लिए खतरनाक है। पेपर बैग आसानी से एक बार उपयोग होनेवाले प्लास्टिक बैग को बदलने के लिए उपयोग किये जा सकते हैं।

Project Copy

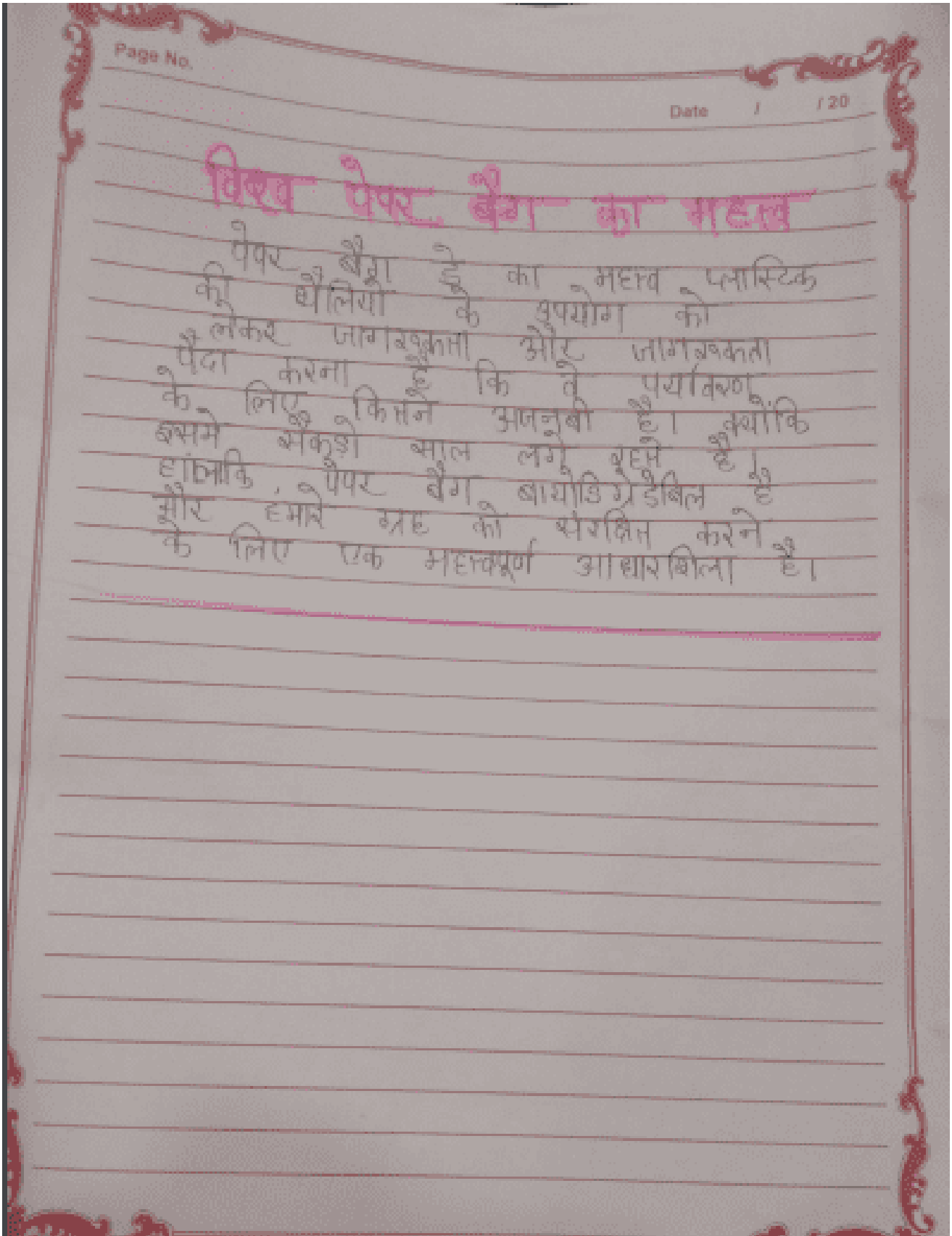

Page No.

Date / /20

विश्व पेपर बैग का महत्व

पेपर बैग्ग डे का महत्व प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग को लेकर जागरुकुता और जागरूकता पैदा करना है कि वे पर्यावरण के लिए कितने अजनबी है। क्योंकि इसमे सैकड़ो साल लग रहे है। हालांकि, पेपर बैग बायोडिग्रेडेबिल है और हमारे ग्रह को संरक्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला है।

Project Copy

Project Copy

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryavani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	Mathematical derivation of 72 Thaat by Pt. Vyankatmakhi and Talas	
Academic Session	2021-22	
Organizing Department/ Committee	Music	
Total Number of Students Participated in the Project	10	
Brief Report	The Project entitled Mathematical derivation of 72 Thaat by Pt. Vyankatmakhi and Talas was undertaken by the Department of Music during the session of 2021-22 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total – students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator VAgarkar	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator Sujata IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	Signature of & Stamp of Principal Principal Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur

Ph.: Off.: 2633233/2955977
|| ओ३म् ||
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
1	Janvi S. Navghare	B.A.	I Year
2	Tukshi S. Somkuwar	B.A.	I Year
3	Rupali S. Bhusewar	B.A.	I Year
4	Shiwani K. Shahu	B.A.	I Year
5	Preeti N. Gautam	B.A.	I Year
6	NamrataSonwani	B.A.	I Year
7	PriyankaDakah	B.A.	I Year
8	SanikaShendre	B.A.	I Year
9	GauriMadavi	B.A.	I Year
10	KashishSakhre	B.A.	I Year

Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka Nagpur

Music Project

Project on Mathematical derivation of 72 Thaat by Pt. Venkatmakhi & Tales.

Class → B.A. I

Session → 2021 - 22

Project Submitted by

Janvi S. Navghare

ओ३म्

ARYA VIDYA SABHA'S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur

'MUSIC PROJECT'

Organised By

Department of Music

CERTIFICATE

This is to certify that the project work in the subject Music entitled Mathematical derivation of 72 Thaat by Vyankatmakhi and Talashas been successfully completed by Ku. JanviS.Navghare of B.A.I Year during the Academic session 2021-22. Hence the certificate is awarded to her.

VAgarkar

Co-Ordinator
Dr. Varsha Agarkar
Dept. Of Music
DAKM, Nagpur

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Principal
Dr. S. Anilkumar
Principal, DAKM, Nagpur

विषय का चुनाव

भारतीय संगीत का इतिहास 4000 वर्ष प्राचीन है। संगीत की उत्पत्ति आरंभ में वेदों के निर्माता ब्रम्हाजी द्वारा हुई। ब्रम्हाजी ने यह कला शिवजी को दी और शिव के द्वारा देवी सरस्वती को प्राप्त हुवे। सरस्वती जी संगीत कला का ज्ञान नारदजी को प्राप्त हुआ। नारद जी ने स्वर्ग के गंधर्व, किन्नर एवं अप्सराओं को संगीत शिक्षा दी। वहां से ही ऋषि नारद और हनुमान आदि ऋषि संगीत कला में पारंगत होकर भूलोक पर संगीतकला के प्रचारार्थ अवतरित हुवे। धीरे-धीरे वैदिक काल से मध्यकाल व आधुनिक काल में संगीत का प्रचार प्रसार हुआ। वर्तमान युग में संगीत को महाविद्यालय तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य पं विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा पं विष्णु नारायण भातखंडे जी ने किया। साथ-साथ अनेक संगीतज्ञ जैसे गोपाल नायक, तानसेन, स्वामी हरिदास इन्होंने भारतीय संगीत को आगे बढ़ाया।

दक्षिण के पं व्यंकटमखी जी ने गणित द्वारा यह बताया कि एक सप्तक से 72 थाटों की उत्पत्ति हो सकती है। और थाटों से ही राग की उत्पत्ति होती है। और संगीत में हमें अनेक राग है। इसका हमें ज्ञान हो। इसकारण इस विषय का चुनाव किया गया।

उद्देश्य

1) महाविद्यालयीन छात्राओं स्कुल छात्राओं को संगीत शिक्षा का लाभ हो सके।

2) प्राचीन संगीतज्ञों द्वारा संगीत में दिया गया योगदान का प्रचार प्रसार हो सके

3) सभी संगीत सिखनेवाले को तालों का ज्ञान हो सके। तथा उच्च शिक्षा संगीत की प्राप्त करने हेतु संगीत शास्त्र का बेसि ज्ञान प्राप्त हो।

प. व्यंकटमखी जी का 72 थाटों का सिद्धांत

पंडीत व्यंकटमखी द्वारा लिखित गणित सिद्ध 72 थाटों का सिद्धांत

→ 17 वी शताब्दी के उत्तरार्ध में दक्षिण के पंडित व्यंकटमखी ने चतुर्दंडप्रकाशिका नामक ग्रंथ में गणित द्वारा यह सिद्ध किया कि एक सप्तक से अधिक से अधिक 72 थाटों की रचना हो सकती है।

थाट रचना विधि :

सर्वप्रथम उन्होंने 'सा' से 'नि' तक 12 स्वरों को एक लाइन में लिया उसके पश्चात थोडी देरी के लिए उन 12 स्वरों में से तीव्र (मे) को निकालकर सबसे आखरी में तार सप्तक का सां जोड दिया। अब इन 12 स्वरों को बराबर भागों में याने एक एक भाग में छः-छः स्वरो को विभाजीत किया गया। पहले भाग को पूर्वांगे और दूसरे भाग को उत्तरार्ध कहते है।

जैसे : 12 स्वर एक लाइन में इस प्रकार आते है।

सा <u>रे</u> रे <u>ग</u> ग म मे प <u>ध</u> ध <u>नि</u> नि

इसमे तीव्र (मे) को हटाकर तार 'सां' जोड दिया।

सा <u>रे</u> रे <u>ग</u> ग म प <u>ध</u>ध <u>नि</u>नि सां

12 स्वरों को दो भागों में पूर्वांग और उत्तरार्ध में विभाजित किया गया।

पूर्वांग	उत्तरांग
सा <u>रे</u> रे <u>ग</u> ग म	प <u>ध</u> ध <u>नि</u> नि सां

इन दोनों भागों से कितने थाट बनते है। यह हमें सिद्ध करना है।

पूर्वांग [सा रे रे ग ग म]	उत्तरार्ध [प ध ध नि नि सां]
1) सा रे रे म	1) प ध ध सां
2) सा रे ग म	2) प ध नि सां
3) सा रे ग म	3) प ध नि सां
4) सा रे ग म	4) प ध नि सां
5) सा रे ग म	5) प ध नि सां
6) सा ग ग म	6) प नि नि सां

ऊपर बने हुए पूर्वार्ध के पहले स्वर समूह उत्तरार्ध के सभी स्वर समूह से क्रमशः जोड़ने से हमें 6 मेल अथवा थाट प्राप्त होते है। जो इस प्रकार रखेंगे।

1) सा रे ग म प ध नि सां
2) सा रे ग म प ध नि सां
3) सा रे ग म प ध नि सां
4) सा रे ग म प ध नि सां
5) सा रे ग म प नि नि सां
6) सा रे ग म प ध ध सां

इस प्रकार से पूर्वार्ध का हर एक स्वर समूह उत्तरार्ध से क्रमशः जोड़ने के बाद मेल अथवा थाट प्राप्त होते हैं। यह 36 थाट शुद्ध माध्यम से तैयार होते हैं। $6 \times 6 = 36$

यदि किसी प्रकार शुद्ध माध्यम की जगह तीव्र माध्यम रखे तो इसी तरह 36 मेल अथवा थाट तीव्र माध्यम से प्राप्त होते हैं। दोनों माध्यम से मिले थाटों को जोड़ने के बाद $36 + 36 = 72$ थाट तैयार होते हैं। यह पद्धति वेंकटमखी ने गणितानुसार सिद्ध कर दिखाया है।

चौताल

मात्रा → 12
विभाग → 6 हर विभाग में 2-2 मात्राएँ
ताली → 1, 5, 9, 11 की मात्रा पर
खाली → 3, 7 की मात्रा पर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदी	गन
x		0		2		0		3		4	
धा											
x											

यह ताल सिरीफ, ध्रुपद गीत गायन में प्रयोग में लाया जाता है। यह ताल मृदंग पखवाज में बजाया जाता है।

Tabla तबला

Dholak ढोलक

दादरा

मात्रा → 6 हर विभाग में 3-3 मात्राएँ
विभाग → 2
ताली → 1 मात्रा पर
खाली → 4 वी मात्रा पर

1	2	3	4	5	6
धा	धि	ना	धा	ति	ना
X			0		
धा					
X					

एकताल

मात्रा → 12 हर विभाग में 2-2 मात्राएँ
विभाग → 6
ताली → 1, 5, 9, 11 वी मात्रा पर
खाली → 3, 7 की मात्रा पर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकीट	तु	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धि	ना
X		0		2		0				4	
धिं											
X											

यह ताल सभी गीत प्रकारों में प्रयोग में त[illegible] जाता है। जैसे • सरगम गीत और लक्षणगीत छोटा [illegible] बड़ा ख्याल स्कॉम संगीत इत्यादि।

निष्कर्ष

विषय के बारे में ज्ञान होने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया की प्राचीन समय में जितने भी बड़े बड़े संगीतज्ञ कलाकार हुये उन लोगों ने संगीत का प्रचार प्रसार बहोत जोर शोर से किया। जिसके कारण महाविद्यालयीन छात्राओं तथा अन्य संगीत शौकीन युवाओं को इसका लाभ हुआ। और संगीत में सुनने में गाने मे, लिखने में सरलता आयी, और तालो का ज्ञान भी प्राप्त हुआ।